स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

अन्तर्गत

पीएच.डी. (हिंदी)अनुसंधान हेतु

शोधकार्य का प्रारुप

शोधकार्य का शीर्षक

"माताप्रसाद के नाटकों में व्यक्त दलित चेतना के विविध आयाम"

शोधकर्ता

प्रजावती गंगाधर वाघमारे

शोध निर्देशक

डॉ.भगवान एन.जाधव

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं अनुसंधान केंद्र

पीपल्स कॉलेज नांदेड

माताप्रसाद के नाटको में व्यक्त दलित चेतना के विविध आयाम

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य और हिंदी नाटक साहित्य का इतिहास बहुत विस्तृत और महान है। लेकिन कोई भी साहित्य तब तक महान नही कहलाता जब तक वह अपनी सम्पूर्णता को प्राप्त करता। आज हिंदी साहित्य में दलित नाटकों का अध्ययन, अनुसंधान विद्वानों में उपेक्षित ही रहा है। लेकिन अब हिंदी साहित्य नाटक और दलित साहित्य भी अनुसंधान अध्ययन और चिंतन का हिस्सा बन रहे है और दलित साहित्य के विविध पहलूओं पर विस्तृत मात्रा में विचार विमर्श हो रहा है। दलित साहित्य वैसे तो एक आंदोलन के रुप में मराठी भाषा में आरंभ हुआ और केन्द्रीय स्तर पर अपना महत्व प्राप्त करने के बाद हिंदी साहित्य में 1980 के दशक में दलित साहित्य और दलित स्वर अधिक प्रबल रुप में उभरकर आने लगा।

दलित चेतना को विद्वानों ने अलग-अलग दृष्टि से उजागर किया है। प्रा.दत्ता भगत कहते है कि, जो लेखक जन्मता दलित नही है वह भी दलित चेतना की अभिव्यक्ति कर सकता है। लेकिन आज के वास्तव में यह एक तरकीक अनुमान है और दलित चेतना व्यक्त करने वाला हर लेखक जन्म से दलित ही है यह वास्तव है। हिंदी नाटक साहित्य में वरिष्ठ और प्रतिष्ठित लेखक श्री माता प्रसाद का स्थान महत्वपूर्ण है। दलित जीवन को जिस गहराई और सूक्ष्मता से उन्होंने देखा और अनुभव किया है उसका कुशल चित्रण ही उनके लेखन का आधार है। प्रस्तुत अनुसंधान में ऐसे ही महान नाटककार के नाटकों का अध्ययन, चिंतन और अनुसंधान अनिवार्य हो जाता है।

विषय चयन की प्रेरणा :-

हिंदी साहित्य का अध्ययन करता हुये दलित साहित्य के प्रति मुझे महाविद्यालयीन जीवन से ही आकर्षण रहा है। विशेषकर दलित नाटक मुझमे एक जिज्ञासा निर्माण करते रहे है। हिंदी साहित्य में दलित चेतना के स्वर आरंभ से ही प्रस्तुत हुए है। दलित जीवन का चित्रण किसी ना किसी रुप में चित्रीत हुआ है लेकिन नाटक और दलित नाटक यह विषय उपेक्षीत ही रहा है। भारतेंन्दु युग, छायावादी युग और प्रगतीवादी युग में अनेक लेखकोंने दलित जीवन को वाणी देने का काम किया है। जिसमें प्रेमचंद, यशपाल, नागार्जुन, अमृतलाल नागर, राघेंय राघव आदि तमाम लेखकों की रचनाएँ है।

आधुनिक युग में स्वामी अछुतानंद हरिहर ने दलीत नाटक और रंगमंच को स्थापित करने का काम किया है। अछुतानंद के बाद बिहारीलाल, बलवंतसिंह प्रेमी, ओमप्रकाश वाल्मीकी, मोहनदास नैमिशराय, सूरजपाल चौहान और माता प्रसाद जी का नाटक विधा में महत्वपुर्ण योगदान दिया है। इन सभी लेखकों में

माता प्रसाद के नाटक महत्वपुर्ण है जिसपर अतक अनुसंधान कार्य नही हुआ है। उनकी अब तक आठ से ज्यादा नाटक प्रकाशित हो चुके है। उनमें प्रत्येक नाटकों में दलित चेतना के समस्त पहेलुओंका चित्रण हुआ और दलित समाज की समस्याओंकों उजागर किया गया हैं। इसलिए प्रस्तुत विषय अनुसंधान कार्य के लिए चयन किया गया है।

अनुसंधान विषय का उद्देश :-

हिंदी नाटकों में दलित चेतना को प्रखर रुप से चित्रित करानेवाले नाटक और नाटककारों में अपने वर्ग, वर्ण, समाज के संघर्ष को चित्रित कर उन्हें जागृत करने का प्रयास कीया है। उनका अपना भोगा देखा हुआ अनुभव ही नाटक के द्वारा यथार्थ रुप में प्रस्तुत कर आनेवाली पिढीओं के लिए निश्चित पथदर्शक और आदर्श बना हुआ है।

हिंदी दलित नाटकों में माताप्रसादजी के नाटक आज दलित और पिछडों की एकता के पक्षधर बने और उनकी चेतना में वो सारे तथ्य विद्यमान है। कुल मिलाकर अनुभवी लेखक श्री माताप्रसादजी के नाटक यह दलित संवेदना और दलित चेतना के लगभग सभी पहलुओं पर प्रकाश डालते है। उनके नाटकों से हिंदी दलित साहित्य को एक ऊंचाई और गरीमा प्राप्त हुई है। ऐसे महान और अनुभवी लेखक के नाट्यकृतिओं का समस्त पहेलुओं से अध्ययन, चिंतन और संशोधन करना यह प्रस्तुत अनुसंधान कार्य का उद्देश है।

1. हिंदी नाटक साहित्य में दलित नाटककारों का योगदान प्रस्तुत करना
2. हिंदी नाटक के विकास में माताप्रसाद का योगदान उजागर करना
3. माताप्रसाद के नाटकों में व्यक्त दलित चेतना को उजागर करना
4. माताप्रसाद के नाटकों में व्यक्त सामाजिक समस्या को उजागर करना
5. माताप्रसाद के नाटकों का रंगमंच की दृष्टि से अध्ययन करना

अनुसंधान विषय का महत्व :-

हिंदी साहित्य में दलित चेतना के स्वर कहानी, उपन्यास, कविता, आत्मकथा और नाटक जैसी विविध विधाओं में प्रस्तुत हुए है। आज आधुनिक हिंदी साहित्य की ऐसी कोई विधा नही है जिसमे दलित व्यथा, कथा पर न लिखा गया हो। दलीत साहित्य की सुरुवात होने से पूर्व ही हिंदी में साहित्य की विविध विधाओं में दलित चेतना का स्वर प्रखर रुप में ना सही लेकिन सीमित रुप मे क्यों ना हो सुनाई जरुर देता रहा है। हिंदी साहित्य के विविण विधाय जैसे कहानी, कविता, उपन्यास और नाटक जैसी विधाओं मे दलित जीवन

का चित्रण किसी ना किसी रुप में उजागर होता आया है। भारतेंदु युग के बाद नाथुराम शर्मा, सोहनलाल द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त आदि लेखकों ने दलितो पर होनेवाले अत्याचार के विरोध मे रचनाएँ की है। इसके बाद सके बाद छायावादी और प्रगतीवादी दौर में भी दलित जीवन को वाणी देणेवाले नाटक दिखाई देते है। जिसमे प्रेमचंद, यशपाल, नागार्जून, रांघेय राघव आदि लेखकों ने दलित जीवन का चित्रण किया है।

हिंदी दलित नाटकों को सर्वप्रथम स्वामी अछुतानंद ने रंगमंच पर लाया उनके बाद बिहारीलाल, बलवंतसिंह प्रेमी ओमप्रकाश वाल्मीकी और माताप्रसादजी तक आदि सभी लेखकों ने आपने बेहतरिन नाटकों से हिंदी दलित नाटक साहित्य को एक अलग पहचान दी है।

हिंदी दलित नाटककारोंने श्री माताप्रसादजी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। एक लम्बा और व्यापक जीवन अनुभव उनके पास है। अपनी 74 वर्ष की आयु में जिस दलित जीवन को गहराई और सुक्ष्मता से देखा है उसका ही कुशल चित्रण उनके नाटको का आधार रहा है। माताप्रसादजी ने अपने विविध नाटकों के माध्यम से दलितों का जो सामाजिक, धार्मिक, राजकिय आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन प्रस्तुत किया है। उसके माध्यम से उन्होने दलितों का संघर्षमयी जीवन समाज के सम्मुख रखा है। आज उनके साहित्य को समाज अनुसंधान और साहित्य की दृष्टी से यह कार्य महत्वपूर्णही होगा।

गृहितके :-

1. हिंदी नाटक के विकास में दलित नाटककारों का योगदान महत्वपुर्ण रहा है
2. माताप्रसाद का हिंदी नाटक के विकास में विशेष योगदान दिखाई देता है
3. माताप्रसाद नाटकों में दलित चेतना व्यापक रुप से उजागर हुई है
4. माताप्रसाद के नाटक मे दलित समस्याएँ अत्याधिक रुप में उजागर हुई है
5. माताप्रसाद के नाटक रंचमंच की दृष्टिसे अनुकूल है, उनका अनेक जगहों पर मंचन हुआ है
6. माताप्रसाद के नाटकों में दलित की विरता, साहस एवं शौर्य का वर्णन किया गया है
7. माताप्रसाद के नाटकों मे प्रासंगिकता अत्याधिक दिखाई देती है

अनुसंधान विषय की पद्धती :-

ज्ञान का क्षेत्र इतना विस्तृत है कि अध्ययन के लिए मनुष्य की क्षमतायें कम पडने लगी है। इस लिए किसी साहित्य या शास्त्र अध्ययन करने के लिए विविध पद्धतियों के आधार पर ज्ञान को परखना उचित होता

है। प्रस्तुत अनुसंधान लिखित साहित्य पर किया जा रहा विषय एवं उद्देश्यों की दृष्टि से अनुसंधान को उचित पद्धती का प्रयोग किया जाएगा। प्रस्तुत शोधकार्य के लिए निम्नलिखित पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा।

1. अलोचनात्मक शोध पद्धती
2. व्याख्यात्मक शोध पद्धती
3. मननात्मक शोध पद्धती
4. विश्लेषणात्मक शोध पद्धती

साथ ही आवश्यकतानुरुप पद्धतीयों को अपनाया जाएगा।

अध्याय योजना :-

प्रस्तुत अनुसंधान के सभी अध्याय यह शोध कार्य के प्रारुप हेतु प्रस्तुत किये जा रहे है। अनुसंधान कार्य में विषय एवं उद्देशों कि दृष्टी से अध्याय योजना में उचित बदलाव किये जा सकते है।

प्रथम अध्याय : हिंदी नाटक साहित्य मे दलित नाटककारों का योगदान

प्रस्तुत अनुसंधान के प्रथम अध्याय में हिंदी नाटक साहित्य में दलित नाटककारों के योगदान पर विस्तृत अध्ययन किया जायेगा। हिंदी नाटककारों में जैसे की स्वामी अछुतानंद, बलवंतसिंह प्रेमी, ओमप्रकाश वाल्मीकी, सुरजपाल चव्हाण और माता प्रसाद आदि ने आपनी कल्पनाशक्ती के जोर पर नही बल्की उन्होंने एक दलित के तौर पर आपने जिवन में जो भोगा जो अनुभव किया उसे ही अपने नाट्यकृतियोंका विषय बनाया और दलित जीवन को रंगमंच पर उतारने का सफल प्रयास किया है ऐसे ही नाटककारों का प्रस्तुत अध्याय में हिंदी नाटक साहित्य की दृष्टि से अध्ययन किया जायेगा।

द्वितीय अध्यायः माताप्रसाद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

पस्तुत अनुसंधान के द्वितीय अध्याय में माताप्रसाद के संपुर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला जाएगा। माताप्रसाद का व्यक्तीत्व एक कवि, एक नाटककार तक सीमित नही रहा। उन्होने अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल और पूर्वोत्तर परिषद के चेअरमन पद पर भी काम किया है। इसके बावजुद भी उनका साहित्य के प्रति और समाज के प्रति प्रेम कम नही हुआ। उन्होंने बार-बार आपनी नाट्यकृतियों के माध्यम से दलीतों का सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक जीवन समाज के सामने उजागर किया। प्रस्तुत अध्याय में इसी व्यापक और अनुभवी जीवन पर प्रकाश डाला जाएगा।

तृतिय अध्याय : माताप्रसाद के नाटकों की कथावस्तु एवं विशेषताएँ

प्रस्तुत अनुसंधान के तृतीय अध्याय मे माताप्रसाद के नाटकों की कथावस्तु और विशेषताओंका अध्ययन किया जाऐगा। माताप्रसाद के नाटकों में जो दलित समाज के समस्त पहलुओंका चित्रण हुआ है। वो बहुत मार्मिक प्रतित होता है। उन्होंने आपने पात्रों को कमजोर और लाचार के रुप मे नही बल्कि एक घिनौनी समाजव्यवस्था के खिलाप लढते हुए विरों का का वर्णन किया है। उनकी ऐसी ही अनेक विशेषताओं का विस्तृत अध्ययन किया जायेगा।

चतुर्थ अध्यायः माताप्रसाद के नाटको में व्यक्त दलित चेतना के विविध अयाम

प्रस्तुत अनुसंधान के चतुर्थ अध्याय में माताप्रसाद के नाटको मे व्यक्त दलित चेतना के विविध आयामों पर प्रकाश डाला जाऐगा। श्री माताप्रसाद के नाटकों मे दलित चेतना प्रखर रुप में उजागर हुई है अपने नाटकों मे दलितों की विविध समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने जातिवादी घिनौनी प्रवृत्तीयोंपर करारा प्रहार किया है। उनका प्रत्येक नाटक हिंदी दलित साहित्य विमर्श को आगे बढाने में महत्वपुर्ण भुमिका निभा रहा है जिसमे अछुत का बेटा, धर्म के नाम पर धोखा, विरांगना झलकारी बाई, तड़प मुक्ती की, प्रतिशोध, धर्मपरिर्वतन, आंतहीन बेड़ियाँ, विांगना ऊदादेवी पासी जैसे बहेतरिन नाटक है।

पंचम अध्याय : रंगमंच कि दृष्टि से माताप्रसाद के नाटक

प्रस्तुत अनुसंधान के पंचम अध्याय में रंगमंच की दृष्टि से माताप्रसाद के नाटको का अध्ययन एवं मुल्यांकन किया जायेगा। माताप्रसाद के सभी नाटक रंगमंच कि दृष्टी से अत्यंत प्रभावी एवं सफल सिद्ध हुये है और उनका अनेक जगाहों पर सफल मंचन भी हुआ है। नाटकों की कथावस्तु और पात्र भी रंगमंच के साथ-साथ प्रेक्षकों पर भी आपना प्रभाव निर्माण करते है। प्रस्तु अध्याय में रंगमंच कि अनेक पहलुओंके आधार पर श्री माताप्रसाद के नाटकों का अध्ययन एवं मुल्यांकन किया जाऐगा।

षष्ठम अध्यायः निष्कर्ष एवं उपसंहार

प्रस्तुत अनुसंधान के षष्ठम अध्याय में श्री माताप्रसाद के नाटकों मे व्यक्त दलित चेतना विविध आयामों के आधार पर किये गये अध्ययन एवं चिंतन के पश्चात निष्कर्ष एवं उपसंहार को प्रस्तुत किया जाऐगा।

संदर्भ सुचि

1) भारतिय दलित आंदोलन का इतिहास

   - मोहनदास नैमिशराय

2) भारतिय नाट्य साहित्य में दलित चेतना

   - देवेन्द्रराज अंकुर

3) दलित चेतना और मराठी दलित रंगमंच

   - प्रो. दत्ता भगत

4) साठोत्तरी हिंदी नाटक

   - डॉ. निलम राठी

5) दलित रंगमंच का इतिहास

   - डॉ. सुर्यनारायण रणसुभे

6) हिंदी दलित नाटक एक पड़ताल

   - रमणिका गुप्ता

7) दलित साहित्य के स्तंभ

   - डॉ. राजपाल सिंह राज

शोधनिर्देशक

प्रा.डॉ. भगवान एन. जाधव
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं अनुसंधान केंद्र
पीपल्स कॉलेज नांदेड

शोधकर्ता

प्रजावती गंगाधर वाघमारे